नागौर जिले में कृ ष का बदलता स्वरूप (1991-2010)

Changing nature of agriculture in Nagaur district

शोधपर्यवेक्षक
डॉ राजेश भाकर
आचार्य भूगोल वभाग
राजकीय डूंगर महा वद्यालय बीकानेर

शोधार्थी
योगेश टाक
राजकीय डूंगर महा वद्यालय बीकानेर

सारांश :- भारतीय अर्थव्यवस्था में कृ ष का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है , भारतीय कृ ष राष्ट्रीय आय का प्रमुख आधार है, सभी आ र्थक क्रयाकलापों में कृ ष व्यवसाय की सहभा गता रही है । वर्तमान में भी भारत कसानों का देश है । भारत एक कृ ष प्रधान देश होने का यह कारण है क यहाँ कुल आबादी के 70 प्रतिशत लोग अपनी जी वका के लए कृ ष पर आ श्रत है । कृ ष से अन्य क्रया कलापों की तुलना में अ धक आय होती है। राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में कृ ष की लगभग 27 प्रतिशत की भागीदारी है । राजस्थान एक कृ ष प्रधान राज्य है राज्य की आ र्थक क्रयाओं में अन्य व्यवसायों की अपेक्षा कृ ष व्यवसाय की प्रधानता है । वर्ष 2011 के प्राप्त आंकड़ों के अनुसार राजस्थान राज्य की कार्यशील कुल जनसंख्या का लगभग 50 प्रतिशत भाग कृ ष कार्य में संलग्न है । जिनका आ र्थक स्तर भी कृ ष व्यवसाय से ही प्रभा वत है । नागौर जिला भी राजस्थान राज्य का एक कृ ष प्रधान जिला है । यद्य प नागौर जिला खनिजों में धनी है कन्तु संसाधन इतने अ धक वक सत नहीं है क कृ ष प्रधान अर्थव्यवस्था को औद्यो गक अर्थव्यवस्था के रूप परिवर्तित कया जा सके । परन्तु नागौर जिले में वगत वर्षों में कृ ष का बदलता हुआ स्वरूप स्पष्टतया नजर आता है।

शब्दकोश - कृ ष व्यवसाय, संसाधन, कृ ष स्वरूप।

प्रस्तावना :-

भारत की कृ ष में हो रहे अनेको तीव्रगामी बदलते स्वरूप से नागौर जिले की कृ ष भी अछूती नहीं है । यहाँ की कृ ष में न केवल यन्त्रीकरण , संचाई, रासायनिक खादों का उपयोग , कीटनाशक दवाईयों के 3 उपयागे एवं अ धक उत्पादन देने वाले उन्नत बीजों के उपयोग में भारी वृ द्ध हुई है , अ पतु कृ ष की पद्धति

एवं तकनीक में भी बहुत बदलाव हुआ है, जिससे कृ ष उत्पादकता में वृ द्ध नजर आ रही है, ले कन साथ ही पर्यावरणीय प्रदूषण भी परिल क्षत होने लगा है। राज्य एवं देश की आवश्यकताओं के अनुरूप भू म उपयोग व शस्य स्वरूप में भी बदलाव की आवश्यकता है । अतः कृ ष भू म उपयोग व शस्य स्वरूप में बदलाव करके जनसंख्या और उसकी बदलती आवश्कताओं के अनुरूप एक गतिशील कृ ष प्रणाली को अपनाने की आवश्यकता है। आज कृ ष के निय मत पक्षों में धनात्मक एवं ऋणात्मक परिवर्तन होने के कारण कृ ष भू म उपयोग के बदलाव को प्रभा वत कया है।

राजस्थान का कुल क्षेत्रफल 342239 वर्ग कमी है। यह देश का 10.41 प्रतिशत है। राजस्थान में देश का 11 प्रतिशत क्षेत्र कृ ष योग्य भू म है और राज्य में 50 प्रतिशत सकल सं चत क्षेत्र है जब क 30 प्रतिशत शुद्ध सं चत क्षेत्र है। यहां संचाई के साधनों का अभाव पाया उत्पादन लेने के लए लवणीय पानी से संचाई करने से भी नहीं हिचक रहे हैं। इसी का परिणाम है क आज कई खेत नमक की क्यारियों जैसे सफेद दिखाई देने लगे है।

भूजल वैज्ञानिकों के अनुसार जिले में मुण्डवा , मेड़ता, कुचामन पंचायत स मतियाँ अति दोहित क्षेत्र घो षत की जा चुकी है जब क भूजल स्तर के मामले में शेष पंचायत स मतियों की स्थिति भी अच्छी नहीं है। इसके बावजूद कसान अंधाधुंध ट्यूबवेल खुदवाकर पानी निकाल रहे है।

जिले में 5 प्रतिशत कसान ही फसल बोने से पूर्व म ी का परिक्षण करवाते हैं , बा क की 95 प्रतिशत कसान परिक्षण नहीं करवाते है। कसान यदि फसल बोने से पूर्व म ी परीक्षण करवाकर ये पता कर ले क उनके खेत में म ी में कन तत्वों की कमी है और कनकी मात्रा पर्याप्त है. म ी की खारापन कतना है, कस म ी में कौनसी फसल ज्यादा होगी , तो वे अपनी पैदावार को बढ़ा सकते है । कसानों में जागरूकता का अभाव व अ धकारियों को उदासीनता के चलते म ी परिक्षण करने के नाम पर केवल औपचारिकता निभाई जाती है।

<u>अध्ययन क्षेत्र</u> :-

नागौर राजस्थान राज्य का एक ऐसा क्षेत्र है जिसे खनिज सम्पदा के पीछे काफी पहचान मली है । यद्य प यहां संसाधनों का अभाव है । फर भी नागौर कृ ष क्षेत्र में भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है । नागौर जिला राजस्थान के ठीक मध्य में 26°25 से 27°40 उत्तरी अंक्षाश तक व 73°10 से 75°15 पूर्वी देशान्तर तक फैला है । उत्तर से द क्षण जिले की अ धकतम लम्बाई 146 कमी तथा पूर्व से पश्चिम अ धकतम चौड़ाई 229 कमी है । नागौर जिले का कुल क्षेत्रफल 17,718 वर्ग कमी है । वर्ष 2011 के अनुसार जिले में कुल 9 उपखण्ड, 10 तहसीलें और 12 कस्बे हैं।

उद्देश्य :-

- नागौर जिले में कृ ष भू म उपयोग के बदलते स्वरूप का गहन अध्ययन करना ।
- नागौर जिले में कृ ष भू म उपयोग के बदलते स्वरूप को प्रभा वत करने वाले का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- नागौर जिले के कृ ष वकास को उ चत ढंग से नियोजित करना।

प्र व ध :-

- 1991 से 2011 तक के कृ ष क्रयाओं और कृ ष के क्षेत्र में आये व भन्न बदलाव के आंकड़ों के अन्तर को तहसीलवार धनात्मक एवं ऋणात्मक रूप में प्रद र्शत कया है।
- इस शोध पत्र में द् वतीयक आँकड़ों का सहारा लया गया है ये आंकड़े सरकारी एवं गैर-सरकारी व भन्न संस्थाओं से संक लत कये गये हैं।

ववेचना :-

नागौर जिला खनिजों में धनी है । कन्तु संसाधन इतने अ धक वक सत नहीं है क कृ ष प्रधान अर्थव्यवस्था को औद्यो गक अर्थव्यवस्था के रूप में परिवर्तित कया जा सके । जिले की लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या कृ ष कार्य में संलग्न है, यहां की म ी बलुई, बलुई दोमट है। ये मध्यम उपजाऊ होती है तथा जल का स्तर सामान्य है । नागौर जिले की तहसीलों के सभी भागों में संचाई सु वधा कम पायी जाती है। यहां खाद्यन्न फसलों में बाजरा, ज्वार, गेहू,जौ,चना एवं दालें मुख्य फसलें हैं।

नागौर जिले में वगत 20 वर्षो में (1991-2010) में कृ ष क्षेत्र में बहुत ही बदलाव देखने को मलता है | इन 20 वर्षो में तहसीलवार भू म उपयोग के ववरण से स्पष्ट होता है की वर्षा की प्रकृति एंव संचाई सु वधा वस्तार के द्वारा कृ ष क्षेत्र का कतना स्वरूप बदला है |

नागौर जिला भू म उपयोग वर्ष 1991-2010

भू म उपयोग	वर्ष 1991		वर्ष 2010		बदलता स्वरूप -/+
	क्षेत्रफल हैक्टेयर में	प्रतिशत	क्षेत्रफल हैक्टेयर में	प्रतिशत	
कुल भू म	1764299	100	1763821	100	_
वन	12700	0.72	18563	1.05	+0.33
कृ ष के लए अनुपलब्ध भू म	88173	5.00	89197	5.06	+0.06
कृ ष अयोग्य भू म	144902	8.21	145238	8.23	+0.02
पड़ती भू म	255028	14.96	2754247	15.62	+0.66
वास्त वक बोया गया क्षेत्रफल	1263496	71.61	1235399	70.04	-1.57
समस्त बोया गया क्षेत्रफल	1310498	74.28	1410952	79.99	+5.71
दो फसली क्षेत्रफल	47002	3.72	175553	14.21	+10.49

स्रोत : कार्यालय जिला कलेक्टर, नागौर, **1991-2010**

नागौर जिला तहसीलवार वास्त वक बोया गया क्षेत्र का ववरण वर्ष **1991-2010**

क्र. सं.	तहसील	वर्ष 1991		वर्ष 2010		बदलता स्वरूप -/+
		क्षेत्रफल हैक्टेयर में	प्रतिशत	क्षेत्रफल हैक्टेयर में	प्रतिशत	
1.	नागौर	350787	27.76	223618	18.10	-9.66
2.	जायल	161038	12.74	160950	13.02	+0.28
3.	मेड़ता	175368	13.81	175788	14.22	+0.35
4.	डेगाना	129463	10.24	141779	11.47	+1.23
5.	परबतसर	34223	10.38	65155	5.27	-5.11
6.	नावां	100479	7.95	102166	8.26	+0.31
7.	डीडवाना	119712	9.47	111686	9.04	-0.43
8.	लड्नु	92426	7.31	29003	6.96	+0.35
9.	मकराना	-	-	71851	5.81	+5.81
10.	खींवसर	-	-	96403	7.80	+7.80
	योग	1263496	100	1235399	100	

स्रोत : कार्यालय जिला कलेक्टर, नागौर, **1991-2010**

नागौर जिला तहसीलवार समस्त बोया गया क्षेत्र का ववरण वर्ष **1991-2010**

क्र. सं.	तहसील	वर्ष 1991		वर्ष 2010		बदलता स्वरूप
		क्षेत्रफल हैक्टेयर में	प्रतिशत	क्षेत्रफल हैक्टेयर में	प्रतिशत	-/+
1.	नागौर	371047	28.31	248398	17.60	-10.71
2.	जायल	161974	12.36	171964	12.18	-0.18
3.	मेड़ता	185129	14.12	213865	15.15	+1.03
4.	डेगाना	131839	10.06	158110	11.20	+1.14
5.	परबतसर	135005	10.30	68488	4.85	-5.45
6.	नावां	114965	8.77	143867	10.19	+1.42
7.	डीडवाना	122083	9.31	126878	9.00	-0.31
8.	लड्नु	884510	6.75	89689	6.35	-0.40
9.	मकराना	-	-	73322	5.19	+5.19
10.	खींवसर	-	-	116374	8.24	+8.24
	योग	1310498	100	1410952	100	

स्रोत : कार्यालय जिला कलेक्टर, नागौर, **1991-2010**

नागौर जिला तहसीलवार दो फसली क्षेत्र का ववरण वर्ष **1991-2010**

क्र. सं.	तहसील	वर्ष 1991		वर्ष 2010		बदलता स्वरूप
		क्षेत्रफल हैक्टेयर में	प्रतिशत	क्षेत्रफल हैक्टेयर में	प्रतिशत	-/+
1.	नागौर	15787	32.52	24780	14.11	-18.41
2.	जायल	938	2.00	11014	6.27	+4.27
3.	मेड़ता	9762	20.76	38077	21.68	+0.92
4.	डेगाना	2377	5.05	16331	1.89	+0.23
5.	परबतसर	783	1.66	3333	1.89	+0.23
6.	नावां	14487	30.82	41701	23.75	-7.07
7.	डीडवाना	2372	5.04	15192	8.65	+3.61
8.	लड्नु	996	2.11	3683	2.09	+0.02
9.	मकराना	-	-	1471	0.83	+0.83
10.	खींवसर	-	-	19971	11.37	+11.37
	योग	47002	100	175553	100	

स्रोत: जिला सांख्यकीय सांख्यिकीय रुपरेखा, आ र्थक एंव सांख्यिकीय निदेशालय, जयपुर ।

उपरोक्त सार णयों से स्पष्ट है क नागौर जिले की तहसीलों में कस प्रकार वगत वर्षों (1991-2010) में भू म उपयोग, वास्त वक बोया गया क्षेत्र, समस्त बोया गया क्षेत्र और दो फसली क्षेत्र के स्वरूप में परिवर्तन हुआ है।

संचाई गहनता :-

कृ ष एवं भू म उपयोग के अध्ययन में संचाई एक महत्त्वपूर्ण आदान है , मृदामें उपयुक्त पोषक तत्वों की आपूर्ति के लए जल बहुत आवश्यक है। वर्षा की कमी तथा फसल की प्रकृति ने कृत्रिम रूप से संचाई को प्रोत्साहित कया है। भारतवर्ष में हरित क्रांति के बाद फसलों के क्षेत्र के साथ सं चत क्षेत्र में वृ द्ध हुईतथा संचाई का महत्त्व भी बढ़ा है। संचाई से कृ ष उत्पादकता प्रभा वत होती है , वर्तमान में कृ ष उत्पादन की मांग निरन्तर बढ़ रही है अतः संचाई की नियन्त्रित व्यवस्था बहुत ही आवश्यक है। संचाई गहनता क्षेत्र के कृ ष प्रारूप एवं वकास को गति देने का कार्य करती है। बढ़ता हुआ कृ ष उत्पादन का महत्त्व तथा मृदा संरक्षण के लए काम में लए गये व भन्न आयाम बहुत आवश्यक हैं। संचाई गहनता को कुल सं चत क्षेत्रफल एवं कृ ष क्षेत्रफल के प्रतिशत अनुपात के रुप में ज्ञात कया जाता है। इसको निम्न सूत्र द्वारा प्राप्त कया जाता है।

$$\text{संचाई गहनता} = \frac{\text{कुल सं चत क्षेत्र}}{\text{कुल कृ ष भू म क्षेत्रफल}} \times 100$$

संचाई गहनता का उद्देश्य यह अनुमान लगाना है क जिलें में कृ ष क्षेत्रफल के कतने और अंश में संचाई स्रोतों के वकास की आवश्यकता है अर्थात् कृ ष क्षेत्र की आवश्यकता की तुलना में क्षेत्र में संचाई साधनों की आवश्यकता कतनी है तथा जिससे क्षेत्र के वकास के लए प्रभावी योजना बनाई जा सकती है। यदि संचाई गहनता अनुपात 100 से कम है, तो स्पष्ट है क संचाई गहनता अच्छी नहीं है। इसके लए संचाई संसाधन एवं कृ ष भू म अनुपात को उ चत करने की आवश्यकता होती है। अध्ययन क्षेत्र में संचाई गहनता के अन्तर्गत सर्वा धक संचाई गहनता डेगाना तहसील में 37.08 प्रतिशत, जब क सबसे कम संचाई गहनता 20.60 प्रतिशत परबतसर तहसील में है। सम्पूर्ण जिला कृ ष प्रधान है जिससे यहाँ संचाई का प्रतिशत मध्यम पाया जाता है। इसका एक मुख्य कारण वर्षा की कमी के साथ यहाँ कोई बड़ी संचाई परियोजना नहीं होना है। संचाई गहनता सभी क्षेत्रों में अलग-अलग रही है जिसमें कृ ष भू म धरातलीय स्वरूप, वर्षा की प्रकृति वर्षा जल की प्राप्ति कृ ष की प्रवृति एवं कृषक की आ र्थक स्थिति का भी प्रभाव रहता है।

निष्कर्ष व सुझाव :-

नागौर जिला कृ ष प्रधान है , ले कन यहाँ कृ ष वकास एवं कृ ष उपयोग परिवर्तन में अनेक समस्याएँ वद्यमान है, जिसे योजनाबद्ध तरीके से दूर करके कृ ष को अ धक वकास की ओर अग्रसर कया जा सकता है । इसके लए कुछ सुझाव निम्न है ।

1. उपयोगी फसलों जैसे खाद्य, दलहन, तिलहन को प्राथ मकता देना चाहिए।

2. दो फसली क्षेत्र में वृ द्ध की जाए ।

3. उन्नत बीज का उपयोग अ धक व रासायनिक उर्वरकों का उपयोग सी मत स्तर तक व

जै वक खाद को बढ़ावा दिया जाए ।

4. कृषक मेलें व कृ ष प्रदर्शनी का ब्लॉक स्तर पर आयोजन करना चाहिए ।

संदर्भ सूची

- Chouhan, D.S., (1966) "Studies in the Utilization of Agricultural Land " 1st Ed. P. 48.
- आर.सी. तिवारी, बी.एन. संह (2000). "कृ ष भगोल, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद, पृ.सं. 92-97
- मोघे बसंत, जैन (1985): "राजस्थान में कृ ष उत्पादन" राजस्थान हिन्दी ग्रन्थः अकादमी, जयपुर, पृ.सं. 108-111.
- कार्यालय जिला कलेक्टर, नागौर।
- जिला सांख्यिकीय रूपरेखा, आ र्थक एवं सांख्यिकीय निदेशालय, जयपुर।